मेरा जापान

वेदप्रकाश सिंह

मेरा जापान

वेदप्रकाश सिंह

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: अगस्त, 2022

© वेदप्रकाश सिंह

ISBN:978-93-92465-01-7

अनुक्रम

उगुइसु की आवाज़	11
जापानी राग-मिरवा	16
खूब दौड़ने, पढ़ने और मीठा खाने वाली एक जापानी लड़की का अनोखा सपना	21
खोया और पाया	24
किसी एक दिन की जापान डायरी	28
लाई हयात आए कज़ा ले चली चले	33
कागज के सारस	48
जापानविद डोनाल्ड लारेंस कीन	55
क्या आपने रास बिहारी बोस का नाम सुना है?	58
गांधी और उनके तीन (चीनी या) जापानी बन्दर	63
गांधी जी और जापान	69
गांधी जी और फूजी गुरुजी	94
जवाहर लाल नेहरू जी के हाथ की गर्माहट अभी भी याद है	110

जापान की प्राथमिक शिक्षा 120

जापानी शिक्षा-व्यवस्था में श्रम का महत्त्व 126

जापान में हिन्दी : इतिहास और वर्तमान 141

तोत्तो चान और उसका अनोखा विद्यालय 154

परदेस- चुनौतियाँ और संभावनाएँ : जापान के विशेष संदर्भ में 158

भारत और जापान के युवाओं में देशभक्ति की भावना का स्वरूप 164

मेरे जीवन में पुस्तकालय के कुछ संस्मरण 172

जापानी विद्यार्थियों को हिन्दी-अध्यापन के अनुभव 177

हिंदी का यात्रा-साहित्य और जापान 183

जापान से मेरी पहली मुलाकात और पहला अनुभव

तीस मार्च सन् 2017 को जापान पहुँचा। अभी तक जापानी समाज और संस्कृति का एक सिरा भी समझ नहीं पाया हूँ। जब भी कुछ लिखने की सोचता हूँ तो खुद को अयोग्य पाता हूँ। इसी अयोग्यता के चलते अभी तक कुछ भी नहीं लिख पाया। सोच रहा हूँ जैसा भी समझ पाया हूँ उसे लिखना शुरू करूँ। जो कमी रह जाएगी उसे जानकार मित्रों की सहायता से दूर करने का प्रयास करूँगा।

दिल्ली के इंदिरा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से उनतीस मार्च 2017 की शाम एयर इंडिया के हवाई जहाज से अन्तःसत्वा पत्नी को बिछोह के दुःख और शरीर के कष्ट के साथ अकेला छोड़कर विदा हुआ। यह कितना कठोर कदम था। यह बताया नहीं जा सकता।

भारत के सबसे प्रदूषित शहरों में से एक दिल्ली है। शायद सबसे अव्यवस्थित भी। ऐसे शहर से सीधे दुनिया के सबसे साफ़ देशों में से एक जापान जैसे साफ-सुंदर और व्यवस्थित देश में आ गया। हवाई अड्डे से बाहर ओसाका विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के अध्यक्ष, प्रोफेसर अकिरा ताकाहाशी जी मिले। उन्होंने मेल भेजकर अपने आने की सूचना दे दी थी। साथ ही अपनी एक तस्वीर भी भेजी थी कि मैं ऐसा दिखता

हूँ। पहचान के लिए मेरी भी एक तस्वीर माँगी थी। जैसे ही हवाई अड्डे के स्वचालित दरवाजे से बाहर आया उन्होंने ही मुझे तस्वीर के आधार पर पहचान लिया। मेरे हाथ में दो बैग थे। एक बैग पीठ पर था। हाथ से एक बैग साधिकार ले कर मार्गदर्शन करने लगे। साथ ही यात्रा के बारे में बातचीत भी होने लगी। मैं उनके सवालों के जवाब के साथ जापान की सुन्दरता देख कर हैरान और अभिभूत था। इतनी सफाई और चमक, इतनी व्यवस्था और शांति हर ओर दिखी जैसे मैं किसी दूसरे लोक में आ गया था। अपने देश और दुःख-दर्द और बिछोह से परेशान पत्नी की याद इस चकाचौंध के बीच आती-जाती रही। ताकाहाशी जी ने पूछा- "यात्रा कैसी रही?" मैंने कहा "बहुत अच्छी।" मैं जीवन में पहली बार हवाई जहाज पर बैठा था। इसलिए सब कुछ जादू सा लग रहा था। पत्नी को अकेले छोड़कर आने का दुःख इस जादू को कम करने की कोशिश बार-बार करता था। हवाई अड्डे से आगे चलकर अब हम लोग एक ट्रेन स्टेशन में दाखिल हुए। कुछ-कुछ दिल्ली की मेट्रो ट्रेन की तरह लेकिन रूप-रंग में बिलकुल अनोखी ट्रेन में हम लोग बैठे। सब कुछ बहुत जल्दी-जल्दी घटित हो रहा था। एक ट्रेन के बाद दूसरी में बैठे। सामान कभी सीट के ऊपर बने स्थान पर और कभी हाथ में ही पकड़े हुए थे। ट्रेन की सफाई ने भी चमत्कृत किया। गंदगी का नाम और निशान भी नहीं दिख रहा था। ट्रेन के फर्श इतने साफ जैसे अभी इस पर पोलिश की गई हो। ट्रेनें इतनी नई जैसे आज ही बनकर आई हों। हर जगह सुन्दरता, सफाई और शांति। हर

जगह व्यवस्था। हड़बड़ी का भी कोई संकेत नहीं मिल रहा था। यात्रा की थकान के कारण वे शायद मुझे आराम देने के लिए कम बोल रहे थे। मुझे घर जाकर अपने पहुँचने की सूचना देने और सोने की तेज इच्छा महसूस हो रही थी। मैं कुछ गुमसुम, कुछ दुखी, कुछ आश्चर्यचकित-रोमांचित सा इस जादुई लोक को देख और समझने की कोशिश कर रहा था।

फिल्मों में ही अभी तक मैंने विदेश का दृश्य मात्र देखा था। पहली बार उसे महसूस कर रहा था। उसे छू रहा था। उसे आँखों से अपने भीतर भर रहा था। हर साँस में साफ हवा और जापान की सुन्दरता शरीर-मन में जा रही थी। बीच-बीच में ताकाहाशी जी कुछ-कुछ बताते जा रहे थे। अब याद नहीं कि उन्होंने क्या-क्या बताया। वे गंभीर और हंसमुख दोनों ही लग रहे थे। बेवजह न बोलने वाले और न ही चुप्पा। मैं जो भी दृश्य देखता कभी-कभी उसकी तारीफ कर रहा था। वे चुपचाप सुन रहे थे। जब कुछ पूछता तभी कुछ बोलते।

एक-दो घंटे की ट्रेन-यात्रा के बाद स्टेशन से निकलकर हम लोग बाहर आए। बाहर एक टैक्सी हमारे सामने खड़ी थी। जैसे ही हम लोग पास में पहुंचे उसका दरवाजा अपने आप खुल गया। यह दृश्य भी मेरे लिए बिलकुल नया और रोमांचक था। साफ-सुथरी पोशाक पहने और टोपी लगाए एक ड्राईवर टैक्सी से बाहर आया। मुझे लगा यह ताकाहाशी जी का ड्राईवर है। मैं अपनी बातचीत में ताकाहाशी जी को सर कह रहा